उच्च आत्मिक परिपक्वता तक पहुँचने का कोई शॉर्टकट है क्या?

भौतिक संसार में जीवन के भीतर गहरे आत्मिक सबक छिपे होते हैं। इसी कारण प्रभु यीशु अक्सर लोगों को स्वर्ग के राज्य के छिपे हुए भेद सिखाने के लिए सांसारिक उदाहरणों और दृष्टांतों का उपयोग करते थे (मत्ती 13:34–35)।

समाज में यदि किसी व्यक्ति को प्रोफेसर या अकादमिक डॉक्टर कहा जाना हो, तो उसे कई वर्षों तक पढ़ाई करनी पड़ती है, गहन ज्ञान प्राप्त करना होता है और लंबे समय तक शोध के माध्यम से अनुभव हासिल करना होता है। संक्षेप में, उच्च शिक्षा के बिना अकादमिक रूप से डॉक्टर कहलाना असंभव है।

लेकिन डॉक्टरेट की एक और प्रकार भी होती है, जिसे मानद डॉक्टरेट कहा जाता है। यह अक्सर उस व्यक्ति को दी जाती है जिसने समाज में कोई विशेष और महत्वपूर्ण योगदान दिया हो। ऐसे व्यक्ति को औपचारिक शैक्षणिक प्रशिक्षण के बिना भी यह उपाधि मिल सकती है।

आत्मिक जीवन में भी यही सिद्धांत लागू होता है

आत्मिक जीवन में भी यही बात लागू होती है। कोई व्यक्ति एक महान आत्मिक शिक्षक बन सकता है, आत्मिक रूप से अत्यंत परिपक्व हो सकता है, यहाँ तक कि समझ और विवेक में अपने आत्मिक पिता, पास्टर,

बिशप या प्राचीनों से भी आगे निकल सकता है।

यह कैसे संभव है?

इसका उत्तर हमें पवित्रशास्त्र में मिलता है:

भजन संहिता 119:99–100
“मैं अपने सब गुरुओं से अधिक समझ रखता हूँ,
क्योंकि तेरी चितौनियाँ मेरा ध्यान हैं।
मैं प्राचीनों से भी अधिक समझदार हूँ,
क्योंकि मैं तेरे उपदेशों को मानता हूँ।”

इन वचनों पर ध्यान देने से एक अद्भुत बात सामने आती है: वक्ता एक विद्यार्थी है, फिर भी वह निडर होकर कहता है कि उसकी समझ उसके शिक्षकों से भी अधिक है। वह अभी भी उनके अधीन है, फिर भी उसकी आत्मिक समझ उनसे आगे बढ़ चुकी है। उम्र में छोटा होने पर भी उसका विवेक प्राचीनों से अधिक है।

यह कैसे हुआ?

क्या इसलिए कि उसने दूसरों से अधिक पुस्तकें पढ़ीं?

क्या इसलिए कि उसमें कोई विशेष प्राकृतिक प्रतिभा थी? नहीं।

वह स्वयं स्पष्ट करता है:

“तेरी चितौनियाँ मेरा ध्यान हैं”
“मैं तेरे उपदेशों को मानता हूँ”

आत्मिक परिपक्वता का सच्चा शॉर्टकट

यही रहस्य है:
दिन-रात वह सत्य—परमेश्वर के वचन—पर मनन करता है और उसे अपने दैनिक जीवन में जानबूझकर अपनाता है। वह केवल वचन को जानता ही नहीं, बल्कि उसे जीता भी है। वह पाप से बचता है और अपने जीवन को परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार ढालता है।

यही वह बात है जो किसी व्यक्ति को आत्मिक रूप से सबसे तेज़ी से परिपक्व बनाती है—इन सब से भी अधिक तेज़:

बहुत सारी जानकारी इकट्ठा करना

अनेक प्रकाशन (revelations) प्राप्त करना

बार-बार प्रचार करना

अक्सर शिक्षा देना

कोई व्यक्ति गहरा ज्ञान रखने वाला, सामर्थी शिक्षक या अत्यंत प्रभावशाली प्रेरित भी हो सकता है, फिर भी वह उस विद्यार्थी से पीछे रह सकता है जो सच्चे मन से परमेश्वर के वचन के अनुसार जीवन जीने का प्रयास करता है।

यीशु ने स्वयं इस सिद्धांत पर ज़ोर दिया:

मत्ती 7:24
“जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन पर चलता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान होगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया।”

परमेश्वर अपने सच्चे आत्मिक शिक्षकों को कैसे पहचानता है

परमेश्वर अपने आत्मिक शिक्षकों को इस प्रकार पहचानता है:
न उपाधियों से, न लोकप्रियता से, न ही असंख्य प्रकाशनों से—बल्कि प्रभु के भय से।

परमेश्वर का भय रखना आत्मिक उपलब्धियों के सभी रूपों से बढ़कर है। भले ही किसी के पास ज्ञान, वाक्पटुता या प्रभाव न हो, यदि वह सच में परमेश्वर से डरता है, तो वह आत्मिक रूप से बहुत आगे बढ़ चुका है।

क्योंकि बाइबल सिखाती है कि ज्ञान की खोज का कोई अंत नहीं, परंतु परमेश्वर का भय सभी शिक्षाओं से श्रेष्ठ है।

सभोपदेशक 12:12–13
“बहुत पुस्तकें बनाने का कोई अंत नहीं, और बहुत अध्ययन से
शरीर थक जाता है।
अब सब कुछ सुन लिया गया है; बात का सार यह है:
परमेश्वर से डरो और उसकी आज्ञाओं को मानो,
क्योंकि यही मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य है।”

अंतिम प्रोत्साहन

आइए हम अपनी पूरी सामर्थ्य परमेश्वर के वचन को जीने में लगाएँ,

केवल उसे जानने में नहीं।
परमेश्वर का अनुग्रह हमें आज्ञाकारिता में चलने में सहायता करे।

प्रभु आपको आशीष दें।

इस शुभ समाचार को दूसरों के साथ साझा करें।

यदि आप अपने जीवन में यीशु मसीह को ग्रहण करने के लिए निःशुल्क सहायता चाहते हैं , तो नीचे दिए गए नंबरों पर हमसे संपर्क करें।

प्रतिदिन की शिक्षाएँ WhatsApp पर प्राप्त करने के लिए , नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करके हमारे चैनल से जुड़ें :
 https://whatsapp.com/channel/0029VaBVhuA3WHTbKoz8jx10

संपर्क :
+255 693 036 618
+255 789 001 312

प्रभु आपको आशीष दें।

Share on:
WhatsApp